10वाँ विश्व आयुर्वेद कॉन्ग्रेस और आरोग्य एक्सपो

चर्चा में क्यों?

हाल ही में **देहरादून में 10वें विश्व आयुर्वेद कॉन्ग्रेस (WAC 2024)** और आरोग्य एक्सपो का उद्घाटन किया गया। यह एक महत्त्वपूर्ण मोड़ है जहाँ विभिन्न **विचारधाराओं, संस्कृतियों और नवाचारों की धाराएँ मिलती हैं।**

मुख्य बिंदु

- **"देश का प्रकृति संरक्षण अभियान" का शुभारंभ:**
  - **9वें आयुर्वेद दिवस (29 अक्तूबर, 2024)** के अवसर पर केंद्रीय आयुष मंत्री ने राष्ट्रव्यापी अभियान **"देश का प्रकृति परीक्षण अभियान" का शुभारंभ किया।**
  - इसका उद्देश्य आयुर्वेद सिद्धांतों का उपयोग करके 1 करोड़ से अधिक व्यक्तियों की प्रकृति का आकलन करना है।
  - नागरिकों को इस महान पहल में सक्रिय रूप से भाग लेने और योगदान देने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है।
- **आयुष ग्रिड और वैश्विक निवेश:**
  - आयुष ग्रिड **आयुष क्षेत्र को** डिजिटल बनाने और पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिये **आयुष मंत्रालय की** एक **परियोजना है।**
  - इसके लाभों में **नवाचारों के साथ स्वास्थ्य सेवा में क्रांति लाना, प्रभावशीलता, सुरक्षा और सामर्थ्य में वृद्धि करना शामिल है।**
  - आयुर्वेद से संबंधित पहलों को समर्थन देने के लिये वैश्विक साझेदारों की ओर से 1.3 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश प्रस्तावित है।
- **WAC 2024:**
  - विश्व आयुर्वेद फाउंडेशन (WAF) द्वारा आयोजित, जो विज्ञान भारती की एक पहल है।
  - इस कार्यक्रम के लिये 5500 से अधिक भारतीय प्रतिनिधियों और 54 देशों के 350 से अधिक प्रतिनिधियों ने पंजीकरण कराया।
  - इस कार्यक्रम में **150 से अधिक वैज्ञानिक सत्र और 13 सहयोगी कार्यक्रम शामिल हैं,** जिनमें पूर्ण चर्चाएँ भी शामिल हैं।
  - इसका **विषय है "Digital Health: An Ayurveda Perspectiveअर्थात् डिजिटल स्वास्थ्य: आयुर्वेद परिप्रेक्ष्य"** जो **आयुर्वेद को आगे बढ़ाने के लिये आधुनिक प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाने पर केंद्रित है।**
  - विचार-विमर्श:
    - **डिजिटल उपकरणों के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा वितरण को** बढ़ाना।
    - **अनुसंधान पद्धतियों को** पुनः परिभाषित करना।
    - **आयुर्वेद को वैश्विक स्वास्थ्य** परिदृश्य में एकीकृत करना।
- **आयुष मंत्रालय की भूमिका:**
  - आयुष मंत्रालय विश्व आयुर्वेद कॉन्ग्रेस के **आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता** है, जो **विश्व स्तर पर आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिये भारत की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।**
- **योगदान:**
  - अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से आयुर्वेद ज्ञान, अनुसंधान और प्रथाओं को आगे बढ़ाना।
  - आयुर्वेद की वैश्विक प्रासंगिकता और भविष्य के विकास पर चर्चा करने के लिये विशेषज्ञों, चिकित्सकों और नीति निर्माताओं को शामिल करना।
- **WAC 2024 का महत्त्व:**
  - **आयुर्वेद की समृद्ध विरासत का** जश्न मनाता है और वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में इसके भविष्य की कल्पना करता है।
  - **पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ना,** यह सुनिश्चित करना कि आयुर्वेद एक स्थायी और समग्र स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के रूप में विकसित हो।
  - WAC 2024 आयुर्वेद को वैश्विक स्वास्थ्य सेवा में **परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण आयोजन है।**

विश्व आयुर्वेद फाउंडेशन (WAF)

- यह एक ऐसा संगठन है जो **विश्व स्तर पर आयुर्वेद को बढ़ावा देता है और आयुर्वेद से संबंधित अनुसंधान, स्वास्थ्य कार्यक्रमों** और अन्य गतिविधियों का समर्थन करता है।

- यह **विज्ञान भारती** की एक पहल है जिसकी **स्थापना वर्ष 2011 में हुई थी।** WAF के उद्देश्यों में शामिल हैं:
  - अनुसंधान का समर्थन
  - शिविरों, क्लीनिकों और सेनेटोरियम के माध्यम से स्वास्थ्य कार्यक्रमों का समर्थन करना
  - सेमिनार, प्रदर्शनियाँ और अध्ययन समूहों का आयोजन
  - आयुर्वेद के लिये नीति और योजना में नेतृत्व प्रदान करना
- WAF **विश्व आयुर्वेद कॉन्ग्रेस (WAC) का आयोजन करता है,** जो एक ऐसा आयोजन है जिसमें **वैज्ञानिक सत्र, स्वास्थ्य मंत्रियों के सम्मेलन और अन्य गतिविधियाँ शामिल होती हैं।**
- WAC का उद्देश्य इस बात पर चर्चा करना है कि आयुर्वेद विभिन्न स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान कैसे कर सकता है।

//

आयुष चिकित्सा पद्धति

आयुष में आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी शामिल हैं, आयुर्वेद का 5000+ वर्षों का प्रलेखित इतिहास है।

आयुर्वेद

भगवान ब्रह्मा को आयुर्वेद का प्रथम प्रवर्तक माना जाता है

- **संहिता काल (1000 ईसा पूर्व):** परिपक्व चिकित्सा प्रणाली के रूप में उभरा
  - **चरक संहिता:** सबसे प्राचीन और आधिकारिक संहिता
  - **सुश्रुत संहिता:** आठ विशिष्टताओं में मौलिक सिद्धांत और चिकित्सीय विधियाँ प्रदान करती है
- **मुख्य शाखा:**
  - **आत्रेय पुनर्वसु**- चिकित्सकों की शाखा
  - **दिवोदास धन्वंतरि** - शल्यचिकित्सकों की शाखा

आयुर्वेद की शाखाएँ

- काय चिकित्सा- चिकित्सा।
- शल्य चिकित्सा- सर्जरी।
- शालाक्य तंत्र- ईएनटी और नेत्र विज्ञान।
- बाल रोग चिकित्सा।
- अगद तंत्र- विष विज्ञान।
- भूतविद्या - मनोरोग।
- रसायन- कायाकल्प चिकित्सा और जराचिकित्सा।
- वाजीकरण तंत्र- सेक्सोलॉजी।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा

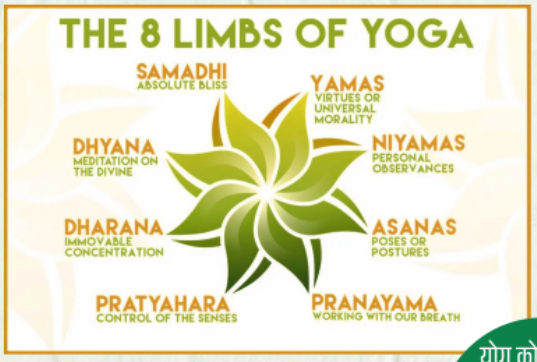

योग को सर्वप्रथम महर्षि पतंजलि ने व्यवस्थित रूप में योगसूत्र के रूप में प्रतिपादित किया

- **प्राकृतिक चिकित्सा:** 5 प्राकृतिक तत्वों - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश की सहायता से उपचार
  - शरीर की स्व-उपचार क्षमता सिद्धांतों और स्वस्थ जीवन के सिद्धांतों पर आधारित
  - रोग-केंद्रित दृष्टिकोण के स्थान पर व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है

यूनानी

ग्रीस में अग्रणी, अरबों द्वारा 7 सिद्धांतों के रूप में विकसित (उमूर-ए-तब्बिया)

- बुकरात (हिप्पोक्रेट्स) और जालीनूस (गैलेन) की शिक्षाओं के ढाँचे के आधार पर
  - चार ह्यूमर्स का हिप्पोक्रेटिक सिद्धांत अर्थात् रक्त, कफ, पीला पित्त और काला पित्त
- WHO द्वारा मान्यता प्राप्त और भारत द्वारा वैकल्पिक स्वास्थ्य प्रणाली के रूप में आधिकारिक दर्जा प्रदान किया गया

सिद्ध

10000 - 4000 ईसा पूर्व; सिद्धर अगस्तियार- सिद्ध चिकित्सा के जनक

- निवारक, प्रोत्साहनात्मक, उपचारात्मक, पुनर्जीवनात्मक और पुनर्वासात्मक स्वास्थ्य देखभाल
- **4 घटक:** लैट्रो-रसायन विज्ञान, चिकित्सा अभ्यास, योग अभ्यास और बुद्धि
- 3 निदानात्मक ह्यूमर्स (मुक्कुट्रम) और 8 महत्त्वपूर्ण परीक्षणों (एन्वागई थेरवु) पर आधारित है

आयुर्वेद के 3 गुण (त्रिदोष): वात, पित्त और कफ

सोवा रिग्पा

उत्पत्ति: भगवान बुद्ध के समय 2500 वर्ष पूर्व भारत में

- लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश आदि के हिमालयी क्षेत्रों में पारंपरिक चिकित्सा।
- भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद् अधिनियम, 1970 (वर्ष 2010 में संशोधित) द्वारा भारत में मान्यता प्राप्त।

होम्योपैथी

जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया

- जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया।
- औषधियाँ मुख्यतः प्राकृतिक पदार्थों (पौधे उत्पाद, खनिज, पशु स्रोत) से तैयार की जाती हैं।
- वर्ष 1810 में यूरोपीय मिशनरियों द्वारा भारत में लाया गया; वर्ष 1948 में आधिकारिक मान्यता प्रदान की गई।
- **3 प्रमुख सिद्धांत:**
  - सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंटूर ("सम: समम् शमयति" या "समरूपता")
  - सिंगल मेडिसिन
  - मिनिमम डोज़

Drishti IAS

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/10th-world-ayurveda-congress-and-arogya-expo